हरियाणा की शौर्य संस्कृति एवं लोक साहित्य

Dr. Mahasingh Poonia
Curator/Director, Dharohar Haryana Museum
Head, Department of Hindi, University College, Kurukshetra Univesity, Kurukshetra
Email - mahasinghpoonia@gmail.com

हरि की भूमि हरियाणा का इतिहास वीरता एवं वीरों की गाथाओं से समाहित है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक हरियाणा की शौर्य परम्परा के किस्से जनमानस की जुबान पर रचे एवं बसे हुए हैं। हरियाणा लोक साहित्य में जहां एक ओर लोक पारम्परिक तरीके से शौर्य परम्परा का इतिहास रहा है वहीं पर दूसरी ओर शहादत के प्रति यहां के लोगों का जज्बा देखते ही बनता है। जब-जब भारत माता पर दुश्मनों की कुदृष्टि पड़ी तब-तब हरियाणा के शूरवीरों ने अपना बलिदान देकर भी दुश्मनों से लोहा लिया तथा अपने वतन की रक्षा की। यहां के कवियों, गायकों का योगदान भी भरपूर रहा। कविताओं, रागनियों, महिला लोकगीतों का योगदान भी राष्ट्रभक्ति जगाने में रहा है। कितने ही गीत हैं जिनको सुनकर कोई भी राष्ट्रभक्त नागरिक अपने वतन पर मर मिटने को तैयार रहेगा। आम आदमी में राष्ट्रभक्ति की भावना जगाने के पीछे हमारे महात्माओं, नेताओं व दार्शनिकों की भूमिका भी अहम् रही है। इस प्रदेश से भारतीय सेना को सदा देश भक्त तथा वीर सैनिक प्राप्त होते रहे हैं। इस प्रदेश के नवयुवकों को सेना में भर्ती होने का बड़ा चाव रहता है। इस प्रदेश की वीरांगनाओं ने भी अपनी मांग के सिंदूर अपने पति को देश के प्रति समर्पित करने के लिए शौर्य से परिपूर्ण इस तरह के गीतों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति करती हैं-

पिया भरती हो ले ना पट्टजा छतरापण का तोल
जर्मन म्हं जाकैं लडिए अपने मां बापां का नां करिये
तैं तोपां के आगै अड़िए अपणी छाती नै दे खोल
पिया भरती हो ले ना पट्टजा छतरापण का तोल१

देश के आजाद करवाने के लिए आजादी की लड़ाई के लिए मर मिटने वाले सरदार भगतसिंह, सुभाष चन्द्र बोस, महात्मा गांधी आदि सैंकड़ों देशभक्तों ने अपने भाषणों से, कर्मों से आम हिन्दुस्तानी में राष्ट्रभक्ति की भावना जागृत की। हरियाणवी जन मानस पर पड़े महात्मा गांधी या अन्य राष्ट्र नेताओं के प्रभाव की झलक प्रदेश के लोकगीतों में पूरी तरह मिलती है। यही कारण था कि आजादी की लड़ाई के लिये पूरा प्रदेश तैयार हो गया। हरियाणा किसी भी प्रदेश से कभी पीछे नहीं रहा। यहां की महिलाओं ने लोकगीतों के माध्यम से भी देशप्रेम की भावना जागृत करने का श्रेष्ठ कार्य किया। हरियाणा प्रदेश की लोक धारणा में वीरता का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। इस प्रदेश की माताएं सदा अपने गोदी के लालों को देश पर मर मिटने की शिक्षा देती रही हैं :-

"कर देस की रकसा चाल, लाल मेरे सज धज कै"

हरियाणा का जनमानस सदैव देश एवं राष्ट्र के प्रति समर्पित रहा है। प्रदेश के ग्रामीणांचलों में ढूंढने से अब भी बड़ी संख्या में राष्ट्र भावना से ओतप्रोत लोकगीत मिल जाते हैं। ये एक अलग बात है कि स्वतंत्रता के उपरान्त आजादी की लड़ाई के उत्प्रेरक लोकगीत तेज गति से भुला दिये गये हैं। आमतौर पर अब ये गीत नहीं गाये जाते रहे हैं इसका एक उदाहरण देखिए:

उठो भारत के वासियों
जाग्या सारा संसार
तुम भी जागो श्रीमान जी।
राष्ट्रपिता कहूं या महात्मा,
हो गये गोली के शिकार
तुम भी जागो श्री मानजी।
सुभाष बाबू बंगाल के,
भगतसिंह जागे पंजाब के
जागे गुरू दत्त, सुखदेव, शेखर,
जागोश्री मानजी।
उठो भारत के वासियों
जाग्या सारा संसार
तुम भी जागो श्रीमान जी। २

दीन बंधु सर छोटूराम ने किसानों के हितों के लिए अनेक सार्थक एवं क्रांतिकारी कदम उठाए। उन्होंने कहा था हे भोले किसान मेरी एक बात मान ले, बोलना ले सीख और दुश्मन को पहचान ले। इसके साथ ही उन्होंने काश्तकारों, गरीबों, मजदूरों व किसानों को पारम्परिक ऋणों से मुक्ति दिलवाकर इतिहास रचा। इसके साथ ही महात्मा गांधी एवं सरीखे नेताओं के किस्से लोकगीतों में देखने को मिलते हैं। जैसे:

तडक़े नै छोटूराम आवैगा, घर-घर के न्याय चुकावैगा।
भारतमाता तेरे फिकर म्हं बाबू चंदर बोस गया।
बेरा ना पाट्टै कित फिरै भरमता, होकर तेरा पूता गया।
महात्मा गांधी - जवाहर नू कहैं,
म्हारा भरा-भराया लाल गया। भारत माता। ३

भारत-चीन युद्ध के पश्चात देश में शौर्य की भावना जिस तरीके से पनपी उसको लोक साहित्य में भी समाहित कर लिया गया। यही कारण है कि तत्कालीन लोक गीतों में भारत एवं चीन के युद्धों का ब्यौरा मिलता है और युवाओं में देश भक्ति की भावना का संचार गीतों के माध्यम से होता है।

प्यारी दे वरदान मैं सूं भारत की सन्तान।
देखूं चीन की किलकार जाके कर द्यूं मारो मार।
ओमपती मैं करके दिखाऊँ काम हिन्द म्हं,
सबते ऊंचाकर दूंगा मेरा नाम हिन्द म्हं।
चीन म्हं कर दूं हिंद का राज,
चीनी बणें रहैं मोहताज।
योहे मेरा विचार जाके कर द्यूं मारो मार।। ४

हरियाणवी लोक साहित्य में गांधीवादी विचारधारा का समावेश देखने को मिलता है। गांधी जी का स्वदेशी आंदोलन, असहयोग आंदोलन एवं भारत छोड़ो आंदोलन को भी लोक जीवन में प्रचलित इन गीतों के माध्यम से कुछ यूं प्रस्तुत किया गया है।

अम्मा तो रोवै रै बीरा,
आपणै कौन भरेगा भात,
गांधी नै झंडा ठा लिया।
तू क्यों रोवै री भैणा
याणे से भरैंगे भात,
गांधी नै झंडा ठा लिया।
कौन पीवैगा म्हारै दूध,
गांधी नै झंडा ठा लिया।
याणे से पीवैंगे री भैणा दूध,
गांधी नै झंडा ठा लिया। ५

हरियाणवी लोकजीवन में सामाजिक दृष्टि से देश की सीमा पर शहादत होने की परम्परा को गौरव से जोडक़र देखा जाता है। यही कारण है कि इस परम्परा से जुड़े अनेक लोकगीत लोक साहित्य का हिस्सा हैं। तभी तो इस गीत में भी इसी भावना का संचार देखने को मिलता है-

परीक्षा का समय है रे आज चलो भाई नेफा म्हं।
चीनी चटोरे अकल के कोरें हो रहे साची जान।
आज तेरी लापरवाही से हो रहा भोत नुक्सान।
लेकर के हवाई जहाज, चलो भाई नेफा म्हं।
देश की रक्सा करण खात्तिर, मरते देश दीवाने।
आज वीर बलवान यहां पर जाते हैं पहचाने।
रखणी है देस की लाज, चलो भाई नेफा म्हं।
धोखे बाज आतताई को, मजा चखाना आज
गोले मारो ऐसे वीरों चीनी जावैं भाज।
गंजों की मिटा दो खाज, चलो भाई नेफा म्हं। ६

हरियाणा की महिलाएं भी शहादत के क्षेत्र में अपना अलग आयाम रखती हैं। इसी के चलते वो आजादी की जंग के लिए अपनी शादी तक को मना कर कूदने के लिए प्रेरित होती हैं। हरियाणा की महिलाओं को वीरबानी की संज्ञा दी गई है। ये वो महिलाएं हैं जो वीरों की बानगी लगाती हैं। लोकगीतों में भी देश के प्रति इनकी सोच एंव भावनाओं को कुछ यूं उजागर किया गया है-

केस खोल्ले खड़ी लाड्डो
अरज दादा से करती है।
बाबा जी मेरी मत करो शादी
उमर बारा बरस की है।
लिखा द्यो नाम कांगे्रस म्हं
बनूं मैं सत्यवती नारी। ७

हरियाणवी लोकगीतों में स्वतंत्रता की लड़ाई का जिक्र ही नहीं मिलता अपितु ऐतिहासिक तथ्य भी देखने को मिलते हैं। मुगलों, पठानों का ब्यौरा लोक पारम्परिक गीतों में कुछ यूं देखने को मिलता है-

नणद भावज पाणी चली रे, मल मल धोवैं री पाँय
रगड़ रगड़ दात्तण करैं री, मुगला री बुरी बलाय
इस रूत आई बाली बीजणा री, बीजणे की बहार
लाल ला तम्बुआ तण रहे री, रेशम खिंच रही डोर
आवै तौ फौज पठाण की रे, दे लई तम्बुओं के बीच।
इस रूत.....।
आंदे रे जांदे बटेउड़ा रे, एक सन्देसा ले जाय

बाप म्हारे सैं न्यूं कहो जी, थारी बेट्टी तम्बुआं के बीच।
इस रूत.....।
आंदे रे जांदे बटेउड़ा रे, एक सन्देसा ले जाय
भैया म्हारे सै न्यंू कहो जी, थारी बहणा रे तम्बुआं के बीच।
इस रूत.....।
बाप हमारे हस्ती पर रे, बीरा घोड़े असवार
राजा म्हारै सै न्यूं कहो जी, थारी धन तम्बुआं के बीच।
इस रूत.....।
बाप हमारे हस्ती पर रे बीरा घोड़े असवार
राजा हमारे पालकी रे, चाब्बैं नागर पान।
इस रूत.....।
ओ रे मुगल के छोकरे रे, कर मेरे हस्ती का मोल
मेरी सांवल बेट्टी छोड़ दे रे, कर ले अपणा ब्याह।
इस रूत.....।
ओ रे मुगल के छोकरे रे, कर मेरे घुड़ले का मोल
मेरी चन्द्रावल बहणा छोड़ दे रे, कर ले अपणा ब्याह।
इस रूत.....।
ओ रे मुगल के छोकरे रे, कर मेरी पालकी का मोल
मेरी सांवल गोरी छोड़ दे रे, कर ले अपणा ब्याह।
इस रूत.....।
मेरी सांवल गोरी छोड़ दे रे, कर ले अपणा ब्याह।
इस रूत.....।
ना चहिये तेरा हस्ती रे, ना चहिए लख चार
तेरी सांवल बेट्टी ना छुट्टै रे ना करूं अपणा ब्याह।
इस रूत.....।
ना चहिए तेरी घोड़ली रे, ना चहिए लख चार
तेरी सांवल गोरी ना छुट्टै रे, ना करूं अपणा ब्याह।
इस रूत.....।
ना चहिये तेरी पालकी रे, ना चहिये लख चार
तेरी सांवल गोरी ना छुट्टै रे, ना करूं अपणा ब्याह
इस रूत.....।
बाप हमारे रो दिये रे, भैया खाई है पछाड़
सैयां हमारे हंस दिये रे, ऐसी ल्याऊं दो चार।
इस रूत.....।
जाओ बाल घर आपणे रे, राखूंगी पगिया की ल्याज
रोट्टी ना खाऊं तुर्क की रे, बैठूं आस्सन मा।
इस रूत.....।
जाओ भैया घर आपणे रे, राखूंगी की कुल की ल्याज
पाणी ना पीऊं मैं तुर्क का रे, बैठूंगी आस्सण मार।
इस रूत.....।
जाओ सैयां घर आपणे जी, राखूंगी फेरों की ल्याज
सेज न सोऊं तुर्क की रे, बैठूंगी आस्सण मार।
इस रूत.....।
जाओ मुगल के छोकरे रे, जल भर गड़वा तो ल्याय
प्यास्सी मरै चन्द्रावली रे, जा के भाई है न बाप।
इस रूत.....।
तोबा तोबा मुगल करैं रे, मुल्ला पढ़ैं रे कुरान
देखी ही पर चाखी नहीं रे, कैसी हुई करतार।
इस रूत.....।
दांत जलैं जैसे कौडियां रे, जीभ कमल का सा पात
हाड़ जलैं जैसे लाकड़ी रे, केश जलैं जैसे डाभ।
इस रूत.....।
ठाडी जलै चन्द्रावली रे, जैसे पूतों का चाँद।
इस रूत आई बाली बीजणा री, बीजणे की बहार ८

लोकगीतों में ऐतिहासिक तथ्यों को भी स्थान मिला है। इस प्रकार के अनेकों उदाहरण लोक साहित्य का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जिनमें आंचलिकता का पुट भी देखने को मिलता है। शत्रुता के कारण जो सिंह (जयसिंह) की सास अपनी ही बेटी का सुहाग उजाड़ देती है। जयसिंह की पत्नी सती हो जाती है-

मायड़ भी बरजै रे जो सिंह बाबल भी बरजै
मत ना जइयो ससुराल, गिरैं हीरे लाल।
मायड़ की बरज्या जो सिंह एक न मान्या
छींकत चल्या सुसराल, गिरैं हीरे लाल।
छींकत छाँकत जो सिंह घोड़ा पिलाण्या
टिब्बै भी ढलती रे जो सिंह साला भी मिल ग्या
घर की कुशल बताय जो सिंह, गिरैं हीरे लाल।
भाज्जी तो दौड़ी मेरी माय कुम्हरे कै गइयाँ
एक हाँडी दो पेट, गिरैं हीरे लाल।
एक हाँडी मैं चावल राँधे, एक हाँडी मैं खीर, गिरैं हीरे लाल।
किसकी खात्तर माँ चावल राँधे
किसियाँ की खात्तर खीर, गिरैं हीरे लाल।
भाई भतीजे मेरी जाइ घी चावल राधे
रतन जमाई नै खीर, गिरैं हीरे लाल।
भाज्जी तो दौड़ी मेरी धी ताऊ के आई
साजन डेरे बुलाए, गिरैं हीरे लाल।
टट्टी के ओल्है जो सिंह भी बोल्लै।
सुण लिये गोरी के बोल, गिरैं हीरे लाल।
हुक्का ना पिओ रे जो सिंह पाणी ना पीओ
मत ना खाइयो इनकी खीर, गिरैं हीरे लाल।
भाज्या तो दौड्या साला ताऊ कै आया
उठो न जीजा म्हारे जीम, गिरैं हीरे लाल।
हम तो हमारे साले ग्यारस के बरती
जाय खा ल्याँगे म्हारै देस, गिरैं हीरे लाल।
उठो न जीजा म्हारे घोड़ा पिलाणो
अर हो ल्यो न सालों की साथ, गिरैं हीरे लाल।
टिब्बै तो ढलती रे जो सिंह वीरों की जोड़ी
घोड़े तो लिये हैं आग्गै लाय, गिरैं हीरे लाल।
पहला कटारा मेरी माँ हंसियाँ मैं टाल्या
घोड़ा भी ले हो साला मत खो मेरी ज्यान, गिरैं हीरे लाल।
घोड़ा ना लेऊं जीजा माल न लेऊं
खोऊंगा तेरी ज्यान, गिरैं हीरे लाल।
टिब्बै तो चढ़ कै मेरी माँ देक्खण लाग्गी।
साजन किधर नै जाँय, गिरैं हीरे लाल।
टिब्बै तो ढलते मेरी माँ वीरों की जोड़ी
चील रही मंडराय, गिरैं हीरे लाल।
औरों के घोड़े मेरी माँ हिणसते आवैं
जो सिंह का घोड़ा उदास, गिरैं हीरे लाल।
पहलम ले मेरी जीजी, माल मायला
बैठ्ठी हुक्म बजाय, गिरैं हीरे लाल।
आग लगाऊं तेरा माल मायला
जल जांगी साजन की साथ, गिरैं हीरे लाल। ९

हरियाणा के रणबांकुरों का प्रथम विश्व युद्ध में महत्वपूर्ण योगदान रहा। यहां के वीरों ने जर्मनी, जापान में जाकर अपनी शहादत के गौरवमय किस्सों को जन्म दिया, इसका ब्यौरा लोक साहित्यिक गीतों में देखने को मिलता है। उदाहरण के लिए -

तेरा जरमन जाइयो सत्यानास आज ना तडक़ै।
तनै मारे बिराणे पूत्त झाझाँ मैं भर कै।
जरमन नै गोला मार्या, जा फूट्या अम्बर म्हं
गारद तैं सिपाही भाज्जे, रोट्टी छोड़ गए लंगर म्हं
रै, उन बीराँ का के जीणा, जिनके बाल्लम छ: लम्बर म्हं। १०

महात्मा गांधी देश में अहिंसावादी आंदोलन के लिए जाने जाते हैं। भारत की यही छवि विश्व में गरिमामयपूर्ण अभिव्यक्ति करती है। गांधी जी की हत्या के पश्चात भी लोक जीवन में अनेकों ऐसे गीत पनपे जो तत्कालीन परिस्थितियों को कुछ यूं बयां करते हैं-

ओ जुलमी तनै जुलम कर्या, बापू के गोली मारी।
चारों खूंट म्हं सोग पैलग्या, रे रोवै दुनिया सारी।
आठ कोस का री एक बटेऊ, तेरी बैठक म्हं आरह्या री मां।
बैठी हो कै जय हिन्द कर ले, तेरा जमाई आरह्या री मां। ११

इसी प्रकार लोक मेंे प्रचलित महात्मा गांधी के प्रति संवेदना की अभिव्यक्ति नीचे दिए गए गीत में बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रस्तु की गई है। इस गीत में जनमानस की मनोभावनाओं को कुछ यूं उजागर किया गया है-

काच्चा कुणबा छोड़ पिता जी स्वर्ग लोक नैं सोगे।
भारत के नर नारी बिना पिता के होगे
नत्थूराम जब बैठा जहाज म्हं, बन्दूक लेली हाथ म्हं
जा दिल्ली म्हं जहाज ठहराया, गांधी धौरै आया।
पहली गोली लाग्गी कोन्या दूजी म्हं घबराये।
हे तीजी गोली म्हं प्राण त्यादि दिये मौत घाट पै आये।
हे नत्थूराम तनै सरम न आई किते कुंआ जोहड़ ना पाया। १२

हरियाणवी लोकगीतों में महारानी लक्ष्मीबाई, भगत सिंह, सुभाष चन्द्र बोस, चन्द्र शेखर आजाद जैसे महान राष्ट्र भक्तों का जिक्र भी मिलता है। इसके साथ ही देश भक्ति की भावना से परिपूर्ण यह गीत लोक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। उदाहरण के लिए-

भारत के भाग्य तू, सोता क्यूं जाग तू।
भारत की एक बहादुर बेट्टी लक्ष्मीबाई झाँसी।
उलट-पुलट किया कतल सांडरस,
वीर भगत चढ़े फाँसी।
खेलबो फाग तूँ, भारत के भाग्य तूँ।
इस कोनै से उस कोनै तक हुई दुनिया में हलचल।
कलकत्ता देखिया, पेसावर जा लिया,
पेसावर टोहा काबुल,
नेता सुभाष तू, भारत के भाग्य तू,
सोता क्यों जाग तू। १३

सुभाष चन्द्र बोस ने भारत में आजादी की जो अलख जगाई उसका आम जन पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी की बदौलत लोकगीतों में उनकी भावनाओं को महत्वपूर्ण स्थान मिला। उदाहरण के लिए यह लोकगीत एवं रागनी देखिए जिसमें देशभक्तों का चित्रात्मक विवरण किस तरीके से दिया गया है-

बोस इसी साड़ी ल्या दे, जिसकी चिमक निराली।
राजेन्द्र प्रसाद, पटेल, गाँधी जिस पै वीर जवाहर भी हों
काले पाणी पोंहचाए वीरों ने जान खपाली।
बोस इसी साड़ी ल्या दे जिसकी चिमक निराली ।।
ऊधम सिंह ने देस की खातिर कितना ऊधम मचाया।
भरी हुई सभा के अंदर डायर आन दबाया,
चलो बख्त थारा भी आया, लो शसतर बाँध कमर म्हं
देस की खातिर पड़ै रमाणी खाक जवानों सिर म्हं।।
या साड़ी कित रंगवाई ऐ सखी इस में रंग आजादी का
इसके पहले पल्ले पर गाँधी जी बैठे,
जिन्होंने अहिंसा का पाठ पढ़ाया ऐ सखी।
इसमें रंग आजादी का।
इसके दूसरे पल्ले पर लक्ष्मीजी बैठी,
जिन्होंने भारत आजाद करवाया ऐ सखी।
इसमें रंग आजादी का।
इसके तीसरे पल्ले पर भगतसिंह बैठे
जिन्होंने हंस-हंस के फांसी खाई ऐ सखी
इसमें रंग आजादी का।
या साड़ी भारत में रंगवाई ऐ सखी। १४

आर्य समाज के केन्द्र के रूप में हरियाणा की जनता ने अनेक सामाजिक आंदोलन चलाकर समाज सुधार का बीड़ा उठाया। समाज सुधार को लेकर लोकगीतों में अनेक सार्थकता पूर्ण उदाहरण देखने को मिलते हैं जैसे-

हो पिता पढऩे जाऊं कैदा ल्या मेरे मनका
अ के ऊपर अंग्रेजी और अंग्रेजों का जाणा हो
आ के ऊपर आर्य-औरत का आपस में बतलाणा हो
इ के ऊपर इमरत बाणी ईमान फते बणाणा हो
उ के ऊपर उमरसिंह और उग्रसेन का बाणा हो
ए ऐ पै एकलास हिन्द म्हं एन तै समझाणा हो
ओ के ऊपर ओमनाम दिल के बीच रचाणा हो
अं पै अंगद का पैर जम्यां और अ: पै बाण अुर्जन का।
हो पिता पढऩे जाऊं कैदा ल्या मेरे मनका

क पै कैदा माता-पिता का कृष्ण का अवतार हो
ख पै खात्मा हो दुश्मन का हिन्द का बेड़ा पार हो
ग पै गांधी गोविन्दसिंह के हाथ मैं तलवार हो
घ ड़ पै घनश्याम नै कर्या घड़ूका ल्यार हो
च के ऊपर चतुर्भुज रच्या सब संसार हो
छ के ऊपर छत्रछाया ज पै बीर जवाहर हो
झ पै झण्डा तिरंगा अन्तरयामी रच्या बाग गुलशन का
हो पिता पढऩे जाऊं कैदा ल्या मेरे मनका
य पै युधिष्ठिर र पै राम रावण कैसी मति हो
ल पै लाजपत लक्ष्मीबाई लक्ष्मण कैसा जति हो
व पै वीर विक्रमाजीत, स सुभाष कैसी रति हो
श पै शिवजी ष शेषनाग ना विष्णु तै दूर कति हो
ह पै हरियाणा हिसार के मैं किरोड़ी करोड़पति हो
क्ष पै क्षमा त्र पै त्रष्णा ज्ञ पै ज्ञात्री गति हो
ऋ पै ऋषि चतरसिंह देवी दास तेरे भवन का।
हो पिता पढऩे जाऊं कैदा ल्या मेरे मनका १५

हरियाणा की शौर्य परम्परा एवं हरियाणवी लोकगीतों का परस्पर गहरा नाता है। सांस्कृतिक दृष्टि से लोक पारम्परिक गीत लोक जीवन में धूमिल होते जा रहे हैं। हरियाणवी संस्कृति के इन गीतों को गांव में महिलाएं अक्सर फौजियों को फौज में छोडऩे जाने एवं विदाई के समय गाया करती थीं। वर्तमान में इस तरह की शौर्य गीतों की गायन परम्परा धूमिल पड़ती जा रही है जो एक चिंतन का विषय है।

सन्दर्भ ग्रन्थ:

१. डॉ. शंकर लाल यादव- हरियाणा प्रदेश का साहित्य। पृष्ठ संख्या १६०
२. डॉ. शंकर लाल यादव- हरियाणा प्रदेश का साहित्य। पृष्ठ संख्या १६१
३. डॉ. महासिंह पूनिया- हरियाणा की सांस्कृतिक धरोहर। पृष्ठ संख्या ३२
४. ओम प्रकाश कादियान- हरियाणा के लोकगीत भाग-२। पृष्ठ संख्या २७२
५. डॉ. महासिंह पूनिया- शौर्य परम्परा एवं लोक साहित्य आलेख पुस्तक सांस्कृतिक परम्परा एवं लोक साहित्य। पृष्ठ संख्या ६०
६. डॉ. शंकर लाल यादव- हरियाणा प्रदेश का साहित्य। पृष्ठ संख्या १६२
७. ओम प्रकाश कादियान- हरियाणा के लोकगीत भाग-२। पृष्ठ संख्या २७४
८. डॉ. शंकर लाल यादव- हरियाणा प्रदेश का साहित्य। पृष्ठ संख्या १६२
९. डॉ. महासिंह पूनिया- शौर्य परम्परा एवं लोक साहित्य आलेख पुस्तक सांस्कृतिक परम्परा एवं लोक साहित्य। पृष्ठ संख्या ६२
१०. कल्पना-संस्कृति एवं लोक साहित्य पृष्ठ संख्या ८९
११. डॉ. महासिंह पूनिया- शौर्य परम्परा एवं लोक साहित्य आलेख पुस्तक सांस्कृतिक परम्परा एवं लोक साहित्य। पृष्ठ संख्या ६२
१२. कल्पना-संस्कृति एवं लोक साहित्य पृष्ठ संख्या ८९
१३. डॉ. महासिंह पूनिया- शौर्य परम्परा एवं लोक साहित्य आलेख पुस्तक सांस्कृतिक परम्परा एवं लोक साहित्य। पृष्ठ संख्या ६२
१४. कल्पना-संस्कृति एवं लोक साहित्य पृष्ठ संख्या ८९
१५. डॉ. वृन्दावन शर्मा- जय हरियाणा आलेख हरियाणा सांस्कृतिक दिग्दर्शन- पृष्ठ संख्या ४८